मीरवाह की रातें

चर्चित उर्दू नावेल

रफ़ाक़त हयात

अनुवादः असरार गांधी

मीरवाह की रातें

(उर्दू उपन्यास)

रफ़ाक़त हयात

अनुवाद: असरार गांधी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवंबर, 2024

© रफ़ाक़त हयात

आज की रात उसकी बेकार ज़िंदगी की पिछली तमाम रातों से बेहद अलग थी, शायद इसीलिए उसकी नींद उसकी आँखों से फिसल कर रात के घुप-अँधेरे में कहीं गुम हो गई थी मगर वह उसे तलाश करने की व्यर्थ कोशिश कर रहा था। वह जानता था कि आज रात उसके लिए पलक झपकना दुशवार था और आँखें मूंद कर सोना बिल्कुल असंभव। वह महराबों वाले बरामदे में छत की सीढ़ियों के क़रीब चारपाई पर रज़ाई ओढ़े लेटा हुआ रात गुज़ारने की तदबीर ढूंढ रहा था। वह उठ बैठा और उसने हाथ बढ़ा कर अपने तकिये के नीचे से एक पुरानी और मुड़े-तुड़े पन्नों वाली पत्रिका निकाली और कई बार की पढ़ी हुई कहानियों पर नज़र डालने लगा। उसे 'मोमल राणा' की कहानी बेहद पसंद थी मगर आज अपनी पसंदीदा कहानी पढ़ते हुए न जाने क्यों उसके सर में दर्द होने लगा। महीन शब्दों की पंक्तियाँ जो काग़ज़ की सतह पर क़तार बाँधे खड़ी थीं, धीरे-धीरे बिखरने लगीं। महीन शब्द तूलिका बनकर काग़ज़ की सतह पर एक रेखाचित्र बनाने लगे। रेखाचित्र धुंधला और अस्पष्ट था, मगर ग़ौर करने पर किसी औरत की पीठ मालूम होता था। औरत का ख़याल आते ही वह रेखाचित्र को और अधिक ध्यान से देखने लगा, मगर यह क्या? अचानक सारे शब्द काग़ज़ की सतह से पूरी तरह ग़ायब हो गए, और उनके साथ ही लफ़्ज़ों से बना वह धुंधला रेखाचित्र भी ग़ायब हो गया। वह हैरत से पत्रिका के पन्ने पलटने लगा। पत्रिका के सारे पन्ने पूरी तरह शब्द-रहित हो चुके थे। किसी भी पृष्ठ पर न तो कहानी का शीर्षक लिखा नज़र आ रहा था और न ही कहानी की

इबारत। सारे के सारे काग़ज़ कोरे और सादा नज़र आ रहे थे। उसे एक पल के लिए महसूस हुआ कि वह उस समय मोमल के काक महल में मौजूद है। उसने बेझिझक रिसाले को उसकी जगह वापस रख दिया और तकिये पर अपना सर रखकर वह सीधा लेट गया और रज़ाई को अपने आधे जिस्म पर ओढ़ लिया। उसने कई बार आँखें ज़ोर से मींच कर नींद के ख़ुमार को अपने ज़हन पर छाने की कोशिश की मगर हर बार उसके ज़हन ने इस धोखे को क़बूल करने से इनकार कर दिया। बारम्बार करवटें लेने के बाद वह एक बार फिर सीधा लेट गया।

उसकी आँखें स्वत: मेहराबों वाले बरामदे की ऊंची छत पर भटकने लगीं। बे-ज़रूरत और अकारण वह छत की कड़ियाँ गिनने लगा। उसने पहले दाएं से बाएं और फिर बाएं से दाएं छत की कड़ियों को शुमार किया मगर दोनों बार उनकी संख्या इक्कीस ही निकली। इक्कीस बज़ाहिर तो गिनती का सीधा सादा अदद है मगर उसका उद्दंडता पर उतरा हुआ मस्तिष्क उस संख्या से कोई ख़ास मतलब निकालना चाहता था। इसलिए उसने इक्कीस के दो और एक को आपस में जमा कर दिया और उसके योग 'तीन' पर ख़्वामख़्वाह सोच-विचार करने लगा। यह साधारण सी संख्या उसके ज़हन को ज्यामिति के सूत्र की तरह पेचीदा मालूम हो रही थी। दो की संख्या उस पेचीदगी को नहीं दर्शा सकती थी जो तीन की संख्या में छिपी महसूस हो रही थी। *तीन* यानी *तीसरा* कई तरह के संशयों को जन्म देता था, शायद इसी संदेहजनक तीसरे को मोमल की बग़ल में सोया हुआ देखकर राणा

काक महल छोड़कर हमेशा के लिए चला गया था। वह इस बात से बे-ख़बर था कि मोमल ने महज़ उसके ईर्ष्या भाव को हवा देने और उससे तफ़रीह लेने के लिए अपनी छोटी बहन सोमल को राणा का रूप दिया हुआ था।

मगर नज़ीर राणा महेन्द्र सिंह सोढो नहीं था। वह मेहराबों वाले बरामदे से सटे हुए कमरे से सुनाई देने वाली औरत और मर्द की धीमी-धीमी सरगोशियाँ सुनता रहा। उनकी सरगोशियों के विभिन्न उतार-चढ़ाव महसूस करते हुए, जिनमें यदा-कदा दबी-दबी हंसी और घुटा-घुटा सा क़हक़हा भी शामिल होता था, वह भी ईर्ष्यापूर्ण द्वेष महसूस कर रहा था। उसने उनकी सरगोशियों में छिपी बातों को समझने की बहुत कोशिश की। वह जितनी ज़्यादा कोशिश करता इतना ही ज़्यादा रक़ाबत की दलदल में धंसता चला जाता। ईर्ष्या और रक़ाबत के जज़्बात ने उसकी रग-रग में अजीब सनसनाहट और गर्मी सी पैदा कर दी। वह रज़ाई उतारने पर मजबूर हो गया। कुछ देर बाद कमरे से सरगोशियाँ सुनाई देनी बंद हो गईं, शायद वे दोनों अब सो गए थे।

वह खाट से उतर कर आँगन के ठंडे फ़र्श पर नंगे-पाँव चलने लगा। उसके रग-ओ-पै में दौड़ने वाली गर्मी धीरे-धीरे ख़त्म हो गई मगर एक अजीब सी सनसनी अब भी बाक़ी थी। उसकी ज़िंदगी में ऐसी बेचैनी और पीड़ा भरी रात नहीं आई थी। उसे आशा थी कि उसकी ज़िंदगी की सबसे ख़ूबसूरत और लज़ीज़ घटना सिर्फ़ एक रात की दूरी पर थी मगर यह रात किसी प्रकार कटने का नाम नहीं लेती थी। उसने

ठंडा सांस लेते हुए आसमान पर चमकते हुए सितारों की मांद पड़ती रोशनी को देखा। आज आसमान पर चांद का नाम-ओ-निशान तक नहीं था। उसका दिल चाहा कि वह आगामी रात को पेश आने वाली मुहिम के बारे में आसमान से मदद की दरख़ास्त करे। उसे फ़ौरन ख़याल आया कि आने वाली रात को वह कोई नेक काम करने थोड़ा ही जा रहा है कि वह आसमान से मदद की दरख़ास्त करे। ऐसी दरख़ास्त करने के बदले में अगली रात उसे किसी मुसीबत का सामना भी करना पड़ सकता था। उसने फ़ौरन यह ख़याल छोड़ दिया।

आँगन में टहलते हुए उसे धीमी सी शोंकार सुनाई दी। उसे फ़ौरन याद आया कि रात की ठंडक में साँप और बिच्छू बाहर निकल आते हैं। वह फ़ौरन खाट पर जा लेटा और एक बार फिर नींद की परी को गिरफ़्त में लेने की कोशिश करने लगा। इसी कोशिश के दौरान उसे नींद आ गई, नींद की परी उस पर मेहरबान हो गई।

वह रज़ाई में सिमटा हुआ सो रहा था कि एक ज़नानी आवाज़ ने उसे पुकारा। उसका जवाब न पा कर वह उसके क़रीब आई। उसके चेहरे से रज़ाई हटा कर कुछ पल उसके सोए हुए चेहरे को देखती रही, फिर अपने ठंडे-ठंडे नर्म हाथ से उसने उसके ललाट को छुआ तो वह फ़ौरन जाग गया। वह पलकें झपकाए बिना हैरत से चाची ख़ैरुन्निसा को तकने लगा।

“नज़ीरे अब उठ जा”, कह कर उसने अपना हाथ पीछे हटा लिया।

वह बिस्तर से उठा नहीं और उसने अपने होठों से कुछ कहा भी नहीं। वह हैरान था कि आज सुबह चाची ख़ैरुन्निसा उसे हसीन और आकर्षक क्यों महसूस हो रही थी। शायद अपने स्पर्श की वजह से वह उसके लिए एक पल में सुन्दर हो गई थी। वह अजीब शर्मिंदगी में लिपटी हुई उसकी खाट के पास खड़ी थी। उसके लिबास में सिलवटें पड़ी थीं और बाल बिखरे हुए थे। उसके चेहरे पर नींद की उदासी थी। यकायक उसने अपने सीने से चादर हटाई और अपने दोनों हाथों से फैला कर उसे दुबारा अपने जिस्म पर ताना और ग़ुस्लख़ाने की तरफ़ चली गई।

नज़ीर उसके जाने के बाद उसकी ख़ुशबू को महसूस करता रहा। उसके हाथ का नर्म-गर्म स्पर्श उसके माथे में जज़्ब हो गया था। कुछ देर बाद उसे ग़ुस्लख़ाने के फ़र्श पर पानी गिरने की आवाज़ सुनाई देने लगी। वह खाट पर लेटे-लेटे पानी गिरने की आवाज़ सुनते हुए कसमसाता रहा। उसका जी चाहा कि वह इसी लम्हे भाग कर ग़ुस्लख़ाने में जा घुसे और टाट का पर्दा हटा कर चाची को बे-लिबास देख ले—वह जिसे लिबास में कई मर्तबा बेलिबास देख चुका था। उसने अपनी कल्पना में हैंडपम्प के पानी की धार के नीचे सिमटे औरत के जिस्म को देखा और ठंडा सांस भर के रह गया। उसने अपने जिस्म से रज़ाई हटा दी और आँगन के साथ लगे ख़ाली अहाते की तरफ़ देखने लगा। वहां सुबह की रोशनी फैली हुई थी।

जब वह ठिठुरती हुई ग़ुस्लख़ाने से बाहर आई तो नज़ीर इसे ठीक तरह देख नहीं सका। उसने उसके बदन से उठती साबुन की महक और उसके जिस्म के